हुसैन (अ0) के मक़सद की हिफ़ाज़त करने वाले

मुजाहिदे मिल्लत मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी इज्तेहादी (पाकिस्तान)

इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) का मुबारक नाम आते ही ज़हन में एक बीमार और कमज़ोर बेचारे शख़्स का ख़याल ज़हन में उभरने लगता है। एक ऐसी हस्ती जो इन्तिहाई मजबूरी की हालत में हर ज़ुल्म सहने पर मजबूर थी। इमामे सज्जाद (अ0) के बारे में यह ख़याल ख़ुद उनकी ज़ात पर एक बहुत बड़ा ज़ुल्म है। यह ठीक है कि अल्लाह के इरादे की वजह से आप कर्बला के वाक़ेए, ख़ास तौर पर आशूर के दिन बीमारी की हालत में थे। लेकिन इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि आप सारी ज़िन्दगी मरीज़ रहे। और कोई मुजाहिदाना काम अन्जाम नहीं दिया। बल्कि हक़ीक़त तो यह है आशूर के दिन भी आप पर अल्लाह की मसलेहत की वजह से आपको मरज़ न होता तो आप अपने चचा अब्बास अलमदार (अ0) और भाई अली अकबर (अ0) की तरह बहादुरी के जौहर दिखाते।

लेकिन मसअला यह है कि अगर आप भी अपने बाबा, चचा और भाई की तरह बहादुरी दिखाकर शहादत का जाम पी लेते तो फिर जनाब सय्यिदुश्शोहदा के मिशन को जिस तरह जनाब सय्यिदुश्शोहदा चाहते थे कौन आगे लेकर बढ़ता।

हमें ज़हन में रखना चाहिए कि तारीख़ में कई जगहों पर जनाब सय्यदे सज्जाद ने इस बात की तकरार की है कि उनके लिए मैदाने कर्बला में लड़कर जान दे देना आसान था। मगर नंगे सर रसूल के बेटियों की साथ बाज़ारों में जाना कहीं मुश्किल। यह मुश्किल वह मुश्किल थी और यह इम्तिहान वह इम्तिहान था जिसके लिये काएनात के ख़ुदा की नज़र इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) पर पड़ी।

अगर तफसील का मौक़ा होता तो हम अर्ज़ करते कि जो इम्तिहान जनाब सय्यदे सज्जाद को कूफा व शाम के बाज़ारों में देना पड़ा उस से कहीं कम दर्जा के इम्तिहान जब नबियों के सामने आते थे तो उनके बर्दाश्त के बन्धन टूट जाते थे और वह ख़ुदा के दरबार में चिल्ला उठते थे कि ऐ ख़ुदा अब हमारे इम्तिहान को ख़त्म कर दे। लेकिन हमें पूरी कर्बला की तारीख़ में कहीं नहीं मिलता कि किसी मौक़ पर चौथे इमाम (अ0) ने अल्लाह के दरबार में अपने ऊपर होने वाले ज़ुल्मों की शिकायत की हो बल्कि हर मौक़े पर अल्लाह का शुक्रिया अदा करते नज़र आते हैं।

आख़िर इस इम्तिहान की क्या ज़रूरत थी? जनाब सय्यदे सज्जाद (अ0) पर पड़ने वाली इन मुसीबतों से दीन को क्या फायदा पहुँचा? इन सवालों के जवाब जितने मुश्किल नज़र आते हैं उतने ही आसान हैं। हम अपने नौजवानों के लिए बहुत ही मुख़्तसर और सादे अलफाज़ में इन सवालों का जवाब देने की कोशिश करते हैं।

बात यह है कि सिवाए मदीने और कूफ़े के उस वक़्त की सारी इस्लामी हुकूमत में तबलीग़ के तरीक़े और रास्ते उस वक़्त की हुकूमत के क़ब्ज़े में थे। तबलीग़ के ज़रियों से मुराद मस्जिदें

और दूसरी आम इज्तेमाअ की जगहें। इन तमाम रास्तों और ज़रियों को ज़बरदस्त तरीक़े से सिर्फ इस मक़सद के लिए इस्तेमाल किया जा रहा था कि अल्लाह की पनाह इमाम हुसैन (अ0) और उनके ख़ानदान के लोग हुकूमत के लिये इस्लामी हुकूमत में फितना ईजाद कर रहे हैं (अगरचे हक़ीक़त यही है कि हुकूमत इमाम हुसैन (अ0) ही का हक़ था, मगर इमाम कभी भी अपने इस हक़ के लिये ज़ुल्म व सितम या नाजाएज़ ज़रियों का इस्तेमाल नहीं करता जैसे मौलाए काएनात अली इब्ने अबी तालिब (अ0) ने अबुसुफयान के लशकर तैयार करने की पेशकश के बाद भी घर बैठने को पसन्द किया था) अल्लाह की पनाह इमाम हुसैन (अ0) एक बाग़ी के बेटे हैं, इमाम हुसैन (अ0) ख़ानदानी दुश्मनी की बुनियाद पर जंग के लिये निकले हैं। इमाम हुसैन (अ0) के साथ बेदीन लोगों की एक छोटी सी जमात है। यह है उन इल्ज़ामों का खुलासा जिनका प्रोपेगण्डा सारी इस्लामी दुनिया में किया जा रहा था। यही वजह थी कि रसूल (स0) के नवासे अपने बेहतरीन अन्सारों के साथ कर्बला में शहीद कर दिये गये और इस्लामी दुनिया में कोई तहरीक न उठी।

अब ज़रूरत थी इस बात की कि इमाम हुसैन (अ0) की कुर्बानी को दुनिया के सामने लाया जाए। और लोगों के सामने हक़ीक़ते हाल बयान की जाए। आप सोंच सकते हैं कि यह काम कितना मुश्किल हो सकता है।

सारी इस्लामी दुनिया का दौरा करके यह पैग़ाम लोगों तक पहुँचाना यज़ीद मलऊन की हुकूमत के ज़माने में किसी भी शख़्स के लिए मुमकिन न था। इसलिए इमाम हुसैन (अ0) ने यह ज़िम्मेदारी अपने बेटे इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) और अपनी बहन जनाब ज़ैनब (स0) के हवाले की। जनाब सानिये जहरा (स0) के बारे में हम फिर किसी वक़्त अलग बाब क़ायम करेंगे। इस वक़्त हमारा मक़सद जनाब सय्यदे सज्जाद (अ0) की ज़िम्मेदारी पर रौशनी डालना है। अब आपके लिये कुछ–कुछ साफ होता जा रहा होगा कि क्यों ख़ुदा के इरादे की वजह से चौथे इमाम (अ0) को बीमार रहना ज़रूरी था ताकि ज़ालिम अपने बातिल के धोखे में आपको कैदी बनाकर (अल्लाह की पनाह) आपकी बेइज़्ज़ती के लिए शहर बशहर फिराए। और आप (अ0) ज़ालिम की इस चाल को उसी पर पलटा दें। आप ने अपनी क़ैद से वह काम लिया जो कोई दूसरा न ले सकता था। आप जिस शहर से गुज़रे वहाँ आपने न सिर्फ यह कि अपनी मुकम्मल पहचान कराई बल्कि उन वजहों को भी बयान करते चले गये जिनकी बुनियाद पर आपके बाबा यानी इमाम हुसैन (अ0) की शहादत हुई थी। आप हर शहर, बाज़ार और हर इलाक़े में यज़ीदियत को बेइज़्ज़त करते चले गये। यहाँ तक कि सारी इस्लामी दुनिया में जो यज़ीद के किरदार को नहीं जानता था वह भी जान गया और यज़ीद के ख़िलाफ नफरत लावे में बदल गई। और घबराकर यज़ीद ने ख़ानदाने रिसालत के क़ैदियों को रिहाई दे दी। और कल तक कर्बला के वाकेए को फैलाने वाला यज़ीद परेशानी के आलम में यह कोशिश करने लगा कि किसी तरह लोगों के समाने कर्बला का वाक़ेआ बयान न हो।

लेकिन चौथे इमाम (अ0) अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर चुके थे। और कर्बला के वाक़ेए के थोड़े दिनों बाद ही यज़ीद के ख़िलाफ बग़ावतें भड़कना शुरु हो गयीं यहाँ तक कि मदीने का वाक़ेअ–ए–हुर्रा वजूद में आया यह चौथे इमाम ही का कारनामा है कि आपने यज़ीद और उसके हामियों को क़यामत तक के लिए सारी इन्सानियत के सामने नंगा करके बेइज़्ज़त कर दिया। और उनके नामों को गालियों में दाख़िल कर दिया।

□□□